पाँच दिन, चार रातें
शाहपुर विज़िट

अनिल सिंह

एकलव्य से सम्बद्ध हमारे एक पुराने साथी हैं, अनूप कुमार। घुमक्कड़ी फितरत के व्यक्ति हैं। कारपेंटरी, कबाड़-से-जुगाड़ और विज्ञान के छोटे व कम लागत वाले खिलौने और उपकरण तैयार करने में उनकी महारत है। मध्यप्रदेश के बैतूल ज़िले की शाहपुर तहसील के एक गाँव में उनके कुछ मित्रों ने काफी साल पहले थोड़ी ज़मीन ली थी। वे उस पर जैविक खेती करते हैं। वहीं फार्म हाउस बनाया हुआ है जहाँ वे अकेले रहते हैं। कुछ गाय, बकरियाँ, मुर्गियाँ और एक कुतिया पाल रखी है। खाना खुद पकाते हैं। खेती-किसानी में मदद के लिए एक स्थानीय व्यक्ति को साथ में जोड़ा हुआ है। ज़रूरत पड़ने पर वह व्यक्ति ही अन्य कामगारों का इन्तज़ाम कर देता है। वहाँ एक कुआँ भी है और आसपास सब्ज़ी, केले, पपीते, अमरूद, आम, बाँस आदि के ढेरों पेड़ लगा रखे हैं।*

एक बार हमने बच्चों को भ्रमण के लिए भोपाल से बाहर, शाहपुर ले

* *साथ ही, अनूप जैविक खेती के खूब सारे प्रयोग भी करते रहते हैं।*

जाने का तय किया। सोच यह थी कि बच्चे शहर की दुनिया से हटकर, गाँव-देहात की ज़िन्दगी का तजुर्बा हासिल कर पाएँ। बिना पंखे-कूलर के प्राकृतिक वातावरण में रह सकें। खुद से खाना पकाएँ, पानी भरकर लाएँ, अस्थायी बाथरूम में नहाएँ और शौच के लिए खुली जगह पर जाना भी चुन सकें। नदी में नहाएँ और पेड़ व पहाड़ी पर चढ़ें। कुल मिलाकर, यह उनके लिए कुछ अलग सीखने का एक अच्छा मौका बन सके।

फार्म हाउस की यात्रा

इस सिलसिले में मई के महीने में हमने बच्चों के साथ अनूप के खेत पर जाने की योजना बनाई। इसके लिए आठ साल से बड़े बच्चों को ही चुना गया क्योंकि छोटे बच्चों के लिए घर और माँ-बाप को छोड़कर, चार-पाँच दिनों के लिए बाहर जाना काफी मुश्किल होता।

आनन्द निकेतन के 15 और *मुस्कान* संस्था के 10 बच्चों के साथ हम 6 बड़े लोग मई की एक अलसुबह ट्रेन से इटारसी के लिए रवाना हुए। इटारसी स्टेशन पर उतरकर हम सबने चाय पी और पोहे का नाश्ता किया। फिर दो बड़ी तूफान जीपों में भरकर हम वहाँ से शाहपुर के लिए चल पड़े। उगता हुआ सूरज बहुत-से बच्चों ने उस दिन पहली बार देखा था।

दो-ढाई घण्टों में हम शाहपुर पहुँच गए। अनूप हमें सड़क के एक जोड़ तक लेने आ गए थे, वहाँ से हम सब अपना-अपना बैग लेकर पैदल ही खेत तक पहुँचे। खेतों के बीच से होती हुई पगडण्डी एक खुली जगह पर पहुँची। अनूप ने बताया कि यहाँ से उनकी ज़मीन शुरू होती है। अनूप की आवाज़ सुनकर एक बड़ा-सा काला-भूरा कुत्ता भौंकता और दौड़ता हुआ आ पहुँचा। अनूप ने दूर से ही उसे आवाज़ लगाई, “टिफी...टिफी...।” नज़दीक पहुँचकर उसने साथ चल रहे बच्चों को सूँघा। कई बच्चे डरकर चिल्लाने लगे। अनूप ने झुककर टिफी को गले से पकड़ा और उसे थोड़ा दुलार किया। अनूप ने बताया, “यह टिफी है, कुछ नहीं करेगी।” टिफी सचमुच अनूप के पीछे-पीछे अपनी पूँछ हिलाते हुए चलने लगी। कुछ दूर चलने के बाद उसने अपना रास्ता बदला और एक अलग पगडण्डी पर चलते हुए स्टोर रूम जैसे बने शेड के अन्दर घुस गई।

अनूप ने बताया, “टिफी ने छह बच्चे दिए हैं। अभी वे बहुत छोटे हैं इसलिए टिफी उन्हें लेकर बहुत सतर्क रहती है। किसी भी आने-जाने वाले को स्टोर रूम के पास फटकने भी नहीं देती। अगर कोई आसपास से भी गुज़रे तो उसकी तरफ देखकर गुर्राने लगती है और झपट्टा मारकर दौड़ा भी सकती है। आम तौर पर कुतिया ऐसे समय बहुत आक्रामक होती है। जब तक तुम लोग यहाँ हो,

ध्यान रखना कि कोई भी स्टोर रूम के पास न जाए और न उसके पिल्लों को देखने की जुर्रत करे। टिफी खुद ही एक दिन बाद दोस्ताना बर्ताव करने लगेगी और तुम लोगों के पास आकर मिलेगी। यहीं तुम लोगों के साथ खेलेगी। उसे भी लोगों के बीच रहना अच्छा लगता है। हाँ, लेकिन अपने पिल्लों को हाथ भी न लगाने देगी इसलिए उसकी तो कोशिश भी मत करना।"

मिल-जुलकर काम बाँटना

आसपास दूर-दूर तक खेत फैले हुए थे। रहने के लिए एक छोटा हॉल, दो कमरे और एक किचन था। एक किनारे दो शौचालय बने हुए थे। एक टंकी में पानी था जिसपर नल लगा हुआ था। थोड़ी दूर ही एक कुआँ था जिसपर जाली लगी हुई थी। आम के एक पेड़ पर दो झूले बाँधे गए थे।

यहाँ तक पहुँचने में दोपहर के 12 बज गए थे। हाथ-पैर धोकर हम सब करंज के पेड़ के नीचे इकट्ठे हुए। पेड़ घना था, उसकी छाँव भी घनी और दूर तक फैली हुई थी। पेड़ के नीचे अनूप ने पहले से ही रेत बिछा रखी थी जिसपर पानी सींचकर ठण्डक की गई थी और फिर उसपर दरियाँ बिछाई गई थीं। सबसे पहले अनूप ने हम सबके लिए नींबू पानी का इन्तज़ाम किया। अर्णव जो यहाँ आते ही घर जाने के लिए रुआँसा हो रहा था, उसे सबके लिए एनर्जी ड्रिंक बनाने की ज़िम्मेदारी सौंपी गई। उसकी बहन अनुष्का ने बताया था कि उसे इस काम में बड़ा मज़ा आता है। अर्णव सब भूलकर, अबीर के साथ नींबू पानी बनाने के काम में लग गया। सबको काफी भूख लगी थी इसलिए हम सबने अपने साथ लाया हुआ खाना खोला और बेसब्री से दोपहर का खाना खाने में जुट गए।

खाने के बाद सबने थोड़ा आराम किया। अब बारी थी इन पाँच दिनों की योजना बनाने की। सबके बीच कामों की ज़िम्मेदारी बाँटी गई जैसे खाना क्या बनेगा और उसकी तैयारी के लिए चार-चार लोगों की एक टीम होगी जो हर रोज़ बदलेगी। तो सबसे

पहले चार दिनों के लिए अलग-अलग टीमें बन गईं। कुएँ और टंकी से पानी लाने, बाड़ी से टमाटर, मिर्च, सब्ज़ी, धनिया तोड़कर लाने और खाने की तैयारी में मदद करने के लिए भी एक टीम बनी। यह भी तय हुआ कि सभी लोग अपने-अपने खाने के बर्तनों को साफ करेंगे, और खाना पकाने वाले बर्तन साफ करने की ज़िम्मेदारी भी चार दिनों के लिए अलग-अलग टीमों को सौंप दी गई। दोपहर में ही रात के खाने की प्लानिंग भी हो गई। लगभग आधे लोग शाकाहारी थे और आधे माँसाहार पसन्द करने वाले थे।

प्रकृति के बीच एक यादगार शाम

हमारी बची हुई दोपहर पेड़ के नीचे गपशप करते हुए कट गई। शाम होते ही हम लोग नदी तक गए। नदी किनारे तरबूज़ लगे हुए थे। वहाँ से नदी पर बना हुआ रेलवे पुल भी दिखता था इसलिए हमने रेलगाड़ी को पुल पर से आते-जाते देखा। एक नज़र में पूरी गाड़ी देखना कमाल का अनुभव था।

हम तैयारी से गए थे। सबने अपनी ड्रॉइंग कॉपी, शीट और पेंसिल निकाली। सबसे कहा गया कि जिसको जो भी दृश्य बनाना हो, जहाँ बैठकर बनाना हो, बना सकता है। सबने अपना-अपना चित्र खींचा। किसी ने पानी में तैर रहे एक कीड़े को नज़दीक से देखकर बनाया, किसी ने बेलों के बीच छुपी तरबूज़ की जोड़ी बनाई, किसी ने नदी पर बने पुल का चित्र खींचा, तो किसी ने नदी किनारे बनी हुई झोपड़ी को अपनी ड्रॉइंग शीट पर उतार दिया।

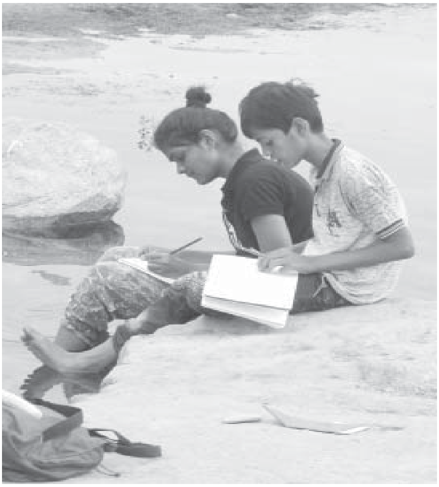

नदी के उस पार एक छोटी पहाड़ी थी। उस पर बने सँकरे रास्ते से मवेशी घर लौट रहे थे। पहाड़ी के पीछे सूरज ढल रहा था। सबने ढलते हुए सूरज को देखा और किसी-किसी ने उस दृश्य को भी अपनी ड्रॉइंग शीट पर उकेर दिया। शाम के हल्के धुँधलके में हम सब वापस लौट आए।

लौटकर आने के बाद अनूप ने हमें फुटबॉल में हवा भरकर दी। सबने उस खाली मैदान पर जमकर फुटबॉल का मज़ा लिया। इस बीच अनूप गाँव जाकर तीन मुर्गे ले आए। अपने फार्म हाउस सहायक कोण्डे की मदद से उन्होंने मुर्गों के माँस की सफाई की और खाना पकाने वाली टीम को बुलाकर मुर्गे को पकाने की विधि समझायी। माँस को मेरीनेट करके रख दिया गया। इस बीच भिण्डी काटी गई। साथ ही, प्याज़, लहसुन, टमाटर, अदरक, मिर्च और धनिया साफ करके काट लिए गए। इस काम में सब जुटे गए थे। पार्थ और गुणरत्न ने मिलकर आटा गूँथा। अनुष्का और सुषमा के साथ मिलकर रोटी बेलने और सेंकने की ड्यूटी आज उनकी थी। अंकित, अम्बर और अनीसा ने चावल और दाल धोकर पकने के लिए चढ़ाए। अनूप, मैंने और विजय ने मिलकर मुर्गा पकाया। इस बीच अर्णव ने सबके लिए एक बार फिर एनर्जी ड्रिंक बनाया। यह उसका पसन्दीदा काम बन गया था। रोहन, तमन्ना, देवेन्द्र और राजवीर ने मिलकर खाना परोसने की तैयारी की। थालियाँ, कटोरी, प्लेट और गिलास पानी से धोकर, पोंछकर एक तरफ रखे गए। इन लोगों ने मिलकर बाहर अहाते में चटाइयाँ बिछाकर, 25 लोगों के एकसाथ बैठकर खाने की व्यवस्था बनाई। पीने के लिए बाल्टी में पानी भरकर रखा।

इस तरह हम सबने रात के खाने में मुर्गा, भिण्डी, दाल-चावल, रोटी, सलाद और छाछ का मज़ा लिया। फिर सबने अपने-अपने बर्तन धोए, साथ ही, पकाने वाले बर्तन सबने उसी वक्त मिलकर साफ कर दिए। खाने के बाद हम सब बाहर टहलने निकले। आम में बौर पक गए थे और उनकी भीनी खुशबू जंगल में फैल रही थी। उस अँधेरे में चाँदनी रात का मज़ा ही कुछ और था।

वहीं अहाते में दरियाँ और गद्दे लगाए गए। कुछ गद्दे हॉल में भी लगाए गए। लोगों ने अपनी-अपनी पसन्द की जगह चुन ली। काफी देर तक किस्से-कहानियों और गीतों का दौर चला, फिर धीरे-धीर सब अपनी-अपनी जगह पर लुढ़कते गए।

रोमांच-मस्ती से भरा दूसरा दिन

दूसरे दिन की सुबह टिफी से हुई। सुबह के छह ही बजे थे और टिफी वहाँ हाजिरी देने के लिए आ गई थी। बिस्तरों पर से होते हुए उसने अहाते का एक चक्कर लगाया और भौंक-भौंककर सबको उठा दिया। अनूप

काफी सुबह उठते हैं। वे गाँव से दूध लाकर पहले ही रसोई में रख चुके थे। उन्होंने टिफी के लिए एक बड़े कटोरे में दूध निकालकर रखा और उसमें कॉर्न-फ्लेक्स डाल दिए। टिफी उसे फटाफट चट कर गई। वह इन्तज़ार कर रही थी कि सब बच्चे जल्दी-से उठ जाएँ तो वह उनके साथ खेले। धीरे-धीरे सब उठ गए। अपने ब्रश-मंजन लिए कुछ बच्चे खुले में, कोई पेड़ के नीचे, कोई बाथरूम में तो कोई कुर्सी पर ही बैठे हुए सुबह का मंज़र देख रहे थे। चाय बनाने वाली टीम ने सबके लिए चाय बनाई। अनूप ब्रेड, बटर और अण्डे लाकर रख चुके थे। कुछ बच्चे ऑमलेट बना रहे थे और उन्होंने पहली बार फ्राइंग पैन पर ऑमलेट को उछालकर पलटना सीखा, फिर सबने अपनी पसन्द का नाश्ता चुना – सैंडविच, ऑमलेट, बिस्किट, दूध और बासी रोटी में से जिसे जो भाया, उसने वह उठाया। सुबह साढ़े सात बजे तक सब तैयार थे। ज़्यादातर बच्चे टिफी के साथ मैदान में फुटबॉल खेल रहे थे। उन्हें रबर की एक छोटी गेंद भी मिल गई थी। बच्चे गेंद को फेंकते और टिफी उसे उठाकर लाती। बच्चों और टिफी के बीच खेल के बहाने अच्छी दोस्ती बन रही थी। कुछ बच्चे कुएँ से पानी खींच रहे थे तो कुछ नहाने की तैयारी में थे। दो पेड़ों के बीच रस्सियाँ बाँधी गई थीं ताकि लोग अपने कपड़े धोकर उन्हें धूप में सुखा सकें। करंज के पेड़ के नीचे की रेत जो कल फैल गई थी, उसे समेटने का काम चार लोगों ने मिलकर किया। दो लोग उस पर पानी सींचकर दरियाँ बिछा रहे थे। दोपहर यहीं जो काटनी थी।

आज अनूप ने पेड़ के नीचे स्टैण्ड पर एक व्हाइट बोर्ड भी रख दिया था। योजना के मुताबिक, आज कुछ मज़ेदार गणित की पहेलियाँ हल की जानी थीं। नौ बजे तक सारे बच्चे पेड़ के नीचे दरियों पर आकर जम चुके थे। अनूप, अंकित और विजय ने हम सबके सामने कई सारी गणित की पहेलियाँ रखीं। इन पहेलियों को बच्चों ने अपनी कॉपी में, रेत पर और कुछ ने व्हाइट बोर्ड पर हल करके देखा। फिर गाँव का एक व्यक्ति खेत से ताज़े तोड़े हुए तरबूज़ लेकर आ गया। दो बच्चों ने मिलकर उन्हें काटा और सबमें बाँटा।

दोपहर का खाना खाने के बाद करंज के पेड़ के नीचे गीत-संगीत की महफिल जमी। हम अपने साथ स्कूल से डफली लेकर गए थे। *मुस्कान* के बच्चों ने हमें कुछ नए गीत सिखाए। 'खाने को न रोटी देंगे किसन कन्हैया, जाम करो मिलकर शोषण का ये पहिया', 'कहब तो लग जाई धक से' आदि सबने साथ मिलकर गाए। इसके बाद बारी आई हमारे सबसे पॉपुलर गाने की। 'गाँव छोड़ब नाहीं, जंगल छोड़ब नाहीं; माय माटी छोड़ब नाहीं, लड़ाई छोड़ब नाहीं'। साथीपन, संघर्ष और आज़ादी की मुखर आवाज़ का जो एहसास यह गीत देता है, वैसा कोई दूसरा गीत नहीं।

तीन बजे के आसपास अनूप ने पास की पहाड़ी पर ट्रैकिंग पर चलने का प्रस्ताव रखा। सब फटाफट तैयार हो गए। पानी की बॉटल, जूते, टोपियाँ-चश्मे और डण्डे से लैस होकर हम पहाड़ी पर ट्रैकिंग के लिए रवाना हुए। पास की एक नदी के उथले हिस्से को पार कर हम दूसरे किनारे की पहाड़ी पर पहुँचे। पलाश और बबूल के पेड़ वाली उस पहाड़ी पर बाँस के झुरमुट और लेंटाना की झाड़ियों से जूझते-उलझते हम सबसे ऊपर पहुँच गए थे। वहाँ से पूरा गाँव हमें साफ दिख रहा था। पहाड़ी के सबसे ऊँचे टीले पर चढ़कर हमने पुल के ऊपर से जाती रेलगाड़ी फिर से देखी। लौटते हुए हमने साँप की बाम्बी देखी और उसके पास ही ताज़ी छोड़ी हुई केंचुली भी। अनूप ने बताया कि यह ब्लैक कोबरा की केंचुली है। एक भैंस का कंकाल भी देखा जो काफी पुराना था। इस तरह आज का दिन रोमांचक रहा। शाम को सात बजे तक हम अपने खेत वापस आ गए थे।

आज वर्षाजी ने किशोर लड़कियों के एक सवाल पर उनसे अलग से बातचीत करने का तय किया था, सो वे उनको अपने साथ लेकर बैठीं। बढ़ती उम्र की उलझनें, शरीर के बदलाव को लेकर बेचैनी, कुछ डर और अन्य कई भावनात्मक मसलों पर उन्होंने डेढ़ घण्टे तक लड़कियों से बातें कीं। वे अपने साथ कुछ किताबें लेकर गई थीं, जिनके ज़रिए भी उन्होंने अपनी बात समझाने की कोशिश की।

इस बीच कोण्डे ने अहाते के पास एक खम्भे पर हैलोजन लाइट लगा दी थी जिसकी रोशनी करंज के पेड़ के नीचे सहित पूरे मैदान पर फैल रही थी। झूले, कुआँ और करंज के नीचे की दोपहर वाली जगह आज रोशन थी। खाना खाने के बाद हम उस मैदान पर कबड्डी खेलने के लिए इकट्ठे हुए। क्या बड़े और क्या छोटे, सबने जमकर कबड्डी खेली। टिफी कुछ देर हमारे साथ-साथ ही यहाँ-वहाँ दौड़ती रही, फिर जब उसे यह खेल समझ में न आया तो एक जगह बैठकर देखने लगी। आज का दिन थकान भरा रहा। कुछ तो जल्दी ही बिस्तरों पर ढेर हो गए और कुछ चाँदनी रात का मज़ा लेते बैठे रहे। कुछ छोटे-छोटे समूह में गपशप में लगे रहे और कुछ अपनी डायरियाँ लिखने में व्यस्त थे।

माटी कला और पॉल्ट्री फार्म

अभी सुबह हुई भी न थी कि पानी की बूँदाबाँदी ने अफरा-तफरी मचा दी। सब हड़बड़ाकर उठ बैठे और अपने-अपने बिस्तर और दरियाँ समेटकर हॉल और कमरों में समा गए। कुछ को मारे गर्मी के नींद नहीं आई। कुछ बाहर निकलकर बूँदाबाँदी का मज़ा लेने लगे। रात के तीन बज रहे थे और पूरब की तरफ चाँद अपने पूरे शबाब पर था जैसे कि सूरज आज तीन बजे ही निकल आया हो! सुबह होने पर काफी देर तक सब रात के किस्से ही सुनते-सुनाते रहे। किसकी चादर, किसका तकिया – हड़बड़ी में सब गड्ड-मड्ड हो गया था।

नाश्ते में पोहा बनाया गया। दूध नहीं आया था तो सबने काली चाय पी। दोपहर के खाने के बाद हम सब शाहपुर में मौजूद माटी कला बोर्ड के कम्यूनिटी लर्निंग सेंटर को देखने गए। वहाँ एक बड़े-से हॉल में लगभग 40 पारम्परिक कुम्हारी कलाकार टेराकोटा आर्ट का प्रशिक्षण ले रहे थे और विभिन्न प्रकार के चाक पर बॉटल, कप, कुल्हड़, छोटे गमले, तवे और तरह-तरह के बर्तन बना रहे थे। बच्चों ने कलाकारों से बातचीत की। कुछ बच्चों ने चाक पर मिट्टी से कुछ-कुछ बनाकर भी देखा। हमने वहाँ सबके साथ बैठकर एक गीत भी गाया, फिर उनकी भट्टी देखने गए। दस फुट ऊँची ईंट और मिट्टी से बनी एक भट्टी थी जिसमें ये सारे बर्तन पकाए जाने थे। हमारे पुराने मित्र और केन्द्र के समन्वयक जीतेन्द्र प्रजापति ने बच्चों को इस पूरे काम के बारे में विस्तार से बताया।

इसके बाद हम वहाँ से कुछ दूर एक गाँव में पॉल्ट्री फार्म देखने गए। छोटे-छोटे चूज़ों से भरे उस जालीदार हॉल में चीं...चीं...चीं... का शोर किसी अनजान संगीत जैसा था। हमने चूज़ों और मुर्गियों के लिए बनाया गया फीडिंग सिस्टम देखा, साथ ही यह भी देखा कि अण्डों को कैसे स्टोर किया जाता है।

वहाँ से लौटकर हम सबको अपना-अपना अनुभव डायरी में लिखना था। जो लिख नहीं रहे थे, उन्हें बोलकर बताना था। शाम को लगभग डेढ़ घण्टे तक हमारा यह अनुभव सत्र चला। रात के खाने की तैयारी हो चुकी थी। आज सिर्फ पुलाव और रायता ही बनाया जाना था।

सीख, दोस्ती और डर का खेल

चौथे दिन सुबह नाश्ते के बाद हम नदी पर गए। अनूप ने रात में ही कोण्डे को बता दिया था कि आज बच्चों को लेकर नदी पर जाना है। दरअसल, कुछ लोगों ने नदी के किनारे महुआ की देसी शराब बनाने का संयंत्र लगा रखा था। अनूप का कहना था कि बच्चों को यह दिखाना चाहिए। कोण्डे हमें वहाँ लेकर गए। टिफी भी हमारे साथ-साथ नदी पर आई। वहाँ आसवन के लिए नदी किनारे ज़मीन पर एक देसी जुगाड़ बनाया गया था। मटकों में महुआ भरकर और उनका मुँह पत्तों से बाँधकर पानी में रखा गया था। महुआ को सड़ाकर, फिर भट्टी में उसे गरम कर, उसकी भाप को ठण्डे पानी से गुज़ारकर, आसवन विधि से देसी शराब बनाए जाने का यह संयंत्र था। कोण्डे ने उसकी पूरी प्रक्रिया समझायी। हालाँकि, यह अवैध था लेकिन दूर दराज़ के इलाकों में चोरी-छिपे यह काम होता ही है। हम सबके लिए यह बिलकुल ही नया अनुभव था।

लौटकर सब नहाने की तैयारी में

जुट गए। कई लोग बाथरूम में, कुछ खुले में तो कुछ पानी की टंकी के पास जाकर नहाने लगे। अंकित के साथ कुछ लोग नदी पर भी नहाने गए।

सब्ज़ी की बाड़ी के बीच एक छोटा कुण्ड था जहाँ नहाने की भी व्यवस्था थी। हमने देखा कि अर्णव टिफी को नहला रहा था। हमारे लिए यह हैरानी की बात थी कि अर्णव ने चुपके-चुपके टिफी से दोस्ती कर ली थी। अनूप का कहना था कि टिफी से कोई जल्दी दोस्ती नहीं कर पाता। अर्णव बहुत ही कॉन्फिडेंट है और उसे जानवरों के व्यवहार और स्वभाव की काफी समझ है। हालाँकि, अभी भी टिफी अपने पिल्लों को दिखाने में सहज नहीं थी। अनूप ने अर्णव से भी साफ बोल रखा था कि टिफी भले ही उसके साथ सहज है लेकिन टिफी के पिल्लों को देखने का खयाल वह अपने मन से निकाल दे। यह खतरनाक हो सकता है। अनूप ने बताया कि वे खुद भी उसके पिल्लों के पास जाने की हिम्मत नहीं करते।

दोपहर का खाना खाने के बाद करंज के पेड़ के नीचे मैंने व्हाइट बोर्ड पर आसवन की पूरी क्रियाविधि समझायी। पुराने समय में पारम्परिक रूप से फूलों के रस से आसवन विधि द्वारा इत्र बनाए जाने की बात भी हुई।

अंकित को कल से दस्त लग रहे थे। इसलिए सुबह से वह सिर्फ छाछ ही पी रहा था। इस पर बात हुई तो अनूप ने व्हाइट बोर्ड पर पाचन तंत्र का चित्र बनाया, और सबने विभिन्न

आन्तरिक अंगों के नाम बताए। फिर अनूप ने पाचन तंत्र की क्रिया प्रणाली समझायी। फायदेमन्द दोस्त बैक्टीरिया और नुकसानदायक बैक्टीरिया पर भी चर्चा हुई। टट्टी और पाद के बारे में भी विस्तार से बात हुई। इस बातचीत में सबको बहुत मज़ा आया। टिफी वहीं अर्णव के पास बैठी रही। शाम को हम सबने बाड़ी के बगल की खाली जगह पर पौधे लगाने के लिए गड्ढे खोदे। अनूप कुछ पौधे लेकर आए थे और कुछ हमें अलग-अलग जगहों से निकालकर, यहाँ कतार में लगाने थे। यह तय हुआ कि अभी गड्ढे खोद लिए जाएँ और सुबह सब लोग इनमें पौधे लगाएँगे।

रात का खाना खाने के बाद सब अपनी-अपनी रुचि के काम में लग गए। इस बीच हम दो-तीन लोगों ने मिलकर सबको डराने का प्लान बनाया। इसके लिए पार्थ और अंकित को साथ में ले लिया। हम पहले ही सबकी नज़र से बचकर कुएँ के पास वाली झाड़ी में एक मच्छरदानी छुपा आए थे। अब योजना के अनुसार, रात दस बजे के करीब मैं किसी बहाने से फार्म हाउस के पीछे वाले रास्ते से होकर, कुएँ के पास वाली झाड़ी में मच्छरदानी के पास पहुँच गया। अंकित ने सबको इकट्ठा किया और दूर इशारा करके दिखाया कि वहाँ झाड़ियों में सफेद-सा कुछ हिल रहा है। उसने कहा, “पहले मुझे लगा हवा से हिल रहा होगा लेकिन अब मुझे लगता है कि वहाँ कुछ तो गड़बड़ है।” अब डर का माहौल बन चुका था। बच्चे सिमटकर एक जगह इकट्ठे हो गए थे। पार्थ ने कहा, “मैं जाकर देखूँ क्या?” अंकित ने उसे मना कर दिया। बच्चों ने कहा, “अनूपजी को बुलाओ।” योजना के मुताबिक अंकित ने कहा कि वे किसी काम से आज इटारसी गए हैं, कल आएँगे। अब तक वह सफेद आकृति झाड़ियों में से थोड़ा बाहर आ चुकी

थी। डर गहराता जा रहा था। सब साँस बाँधे बैठे हुए थे। मैंने मच्छरदानी को लपेट रखा था और एक लम्बे बाँस से उसे इस तरह ऊपर उठाया हुआ था जिससे लगे कि कोई बहुत लम्बा व्यक्ति चल-फिर रहा है। आकृति और नज़दीक आ रही थी। अब तो कुछ बच्चों ने चीखना शुरू कर दिया। स्थिति की नज़ाकत को भाँपते हुए अंकित ने ही चिल्लाकर बताया कि ये तो अनिलजी हैं। मैं भी मच्छरदानी से निकलकर रोशनी में उनके सामने आ गया। तब जाकर बच्चों की जान में जान आई। फिर तो देर रात तक सब भूतों के ही किस्से सुनते-सुनाते रहे।

यात्रा का अन्तिम दिन

आज हमारी यात्रा का पाँचवाँ दिन था। दोपहर बाद वापस जाने की तैयारी भी करनी थी। सुबह चाय और ब्रेड-ऑमलेट के नाश्ते के बाद करंज के पेड़ तले संगीत सभा हुई। फिर हमने कल शाम खोदे गड्ढों में केले, आम, अमरूद और गुड़हल के पौधे लगाए। गड्ढों में मिट्टी भरी और पानी डाला। फिर सब नदी पर नहाने गए। कोण्डे हमें एक साफ-सुथरी और उथले पानी वाली जगह पर ले गए। सबने काफी देर तक नदी में मज़े किए। कुछ ने डुबकी लगाई तो कुछ किनारों पर ही नहाए। वहाँ से लौटकर हमने खाना बनाने की तैयारी की। आज पूड़ी और साग बनाया गया।

दोपहर का खाना हम करंज तले ही खाते थे। अर्णव को सब ढूँढ रहे थे क्योंकि कुछ देर से वह किसी को दिखा नहीं था। अचानक किसी की नज़र बाड़ी के उस पार स्टोर रूम के दरवाज़े पर गई; अर्णव दो पिल्लों को हाथ में लिए चला आ रहा था और टिफी उसके बगल में चल रही थी। हमारे लिए यह अत्यन्त आश्चर्यजनक नज़ारा था क्योंकि अनूप के अनुसार टिफी अभी अपने पिल्लों को किसी को देखने तक न देगी, छूना और उठाना तो दूर की बात है। लेकिन टिफी जिस तरह सामान्य ढंग से अर्णव के साथ चल रही थी, उससे तो यही लग रहा था कि उसने अर्णव को यह इजाज़त दे रखी थी। अर्णव काफी आगे तक आया। फिर एक जगह रुककर उसने हाथों में लिए हुए दोनों पिल्लों को ऊपर उठाकर हमें दिखाया और फिर पलटकर स्टोर रूम की ओर चल पड़ा। टिफी भी उसके साथ-साथ स्टोर रूम तक गई। अर्णव पिल्लों को लेकर अन्दर गया और अन्य तीन पिल्लों को बाहर लाकर, वहीं से हम लोगों को दिखाया और फिर वापस अन्दर रख आया। कुछ ही देर में अर्णव और टिफी दौड़ते हुए हमारी तरफ चले आ रहे थे। अर्णव ने बताया कि “स्टोर रूम में गद्दे के ऊपर छह पिल्ले हैं। तीन काले, दो भूरे और एक सफेद। मैं टिफी के साथ अन्दर गया था। उसने मुझे पिल्ले देखने दिए। मैंने धीरे-धीरे

उन्हें छुआ और फिर उन्हें हाथों में भी उठा लिया। टिफी ने कुछ नहीं बोला। वह मेरे साथ-साथ चली और देखती रही।"

खाना खाने के बाद हमने अपना सामान समेटा। रस्सियों पर सूख रहे कपड़े उठाए और फिर अपने-अपने बैग जमाए। दोपहर को दो बजे हम वापस जाने के लिए तैयार थे। एक तूफान जीप आई हुई थी। सबने उसमें अपने-अपने बैग रख दिए। कुछ बच्चे उसमें बैठ भी गए। बाकी सब पैदल ही सड़क तक चल पड़े। वहाँ से हमें बस पकड़नी थी। अनूप और टिफी हमें छोड़ने के लिए सड़क के जोड़ तक आए। थोड़ी ही देर में बस भी आ गई। रास्तेभर पलाश के फूल अपनी आखिरी शामों में हमें अलविदा कह रहे थे। देर शाम होते हम सब भोपाल में अपने-अपने घरों में पहुँच गए थे। पाँच दिन और चार रातों वाला शाहपुर का हमारा यह सफर बहुत ही रोचक और रोमांचक रहा।

अनिल सिंह: पिछले 25 वर्षों से सामाजिक क्षेत्र में सक्रिय हैं। विगत डेढ़ दशक से प्राथमिक शिक्षा उनका प्रमुख कार्य रहा है। भोपाल के आनंद निकेतन डेमोक्रैटिक स्कूल की संकल्पना के दिनों से वे जुड़े रहे और उसका संचालन किया। वर्तमान में, टाटा ट्रस्ट के पराग इनिशिएटिव से जुड़कर बाल साहित्य और पुस्तकालय संवर्धन का काम कर रहे हैं।

सभी फोटो: अनिल सिंह।